पहला अध्याय
समकालीन हिन्दी उपन्यास
9. समकालीन हिंदी उपन्यास

जीवन को उसकी विविधता एवं समग्रता के साथ व्यापक फलक पर अभिव्यक्ति करने वाली आधुनिक विधा के रूप में उपन्यास विधा को देखा जाता है। वर्तमान युग उपन्यास साहित्य की दृष्टि से एक मूल्य संक्रमण का युग है। एक ओर ऐसी विचारधाराएँ अपने कार्य में ऐसी कठिनताएँ हैं कि वे नये विचारों को धृता बताने में लगी हैं तो दूसरी ओर नयी विचारधाराएँ आन्दोलन का रूप धारण कर मनुष्यता को ही सबसे बड़ा मूल्य मानने के लिए प्रतिबद्ध हैं। समता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और न्यायाधीशित समाज रचना ही उनका लक्ष्य है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में सन् साठ का वर्ष अपनी अलग पहचान, विशेषता और महत्ता रखता है। बीसवीं शताब्दी का उत्तरादेश एक अजीब, अस्तक्रोष, अविश्वास, अत्वीकार, बौद्धि क तथा वैचारिक संघर्ष, मानसिक कश्मकश और परस्परागत जीवन पद्धति के खोजलेपन के एहसास का
जनमदा है। स्वाधीनता के बाद मूल्यहीनता, स्वार्थान्ध्यता, सत्तालोनपता तथा श्रष्टाचार बढ़ जाने के कारण उन्हीं सौ साठ तक पहुँचे-पहुँचे भारतीय समाज सर्वाधिक अनुशासनहीन, विघटित, स्वार्थी एवं अव्यवस्थित बन गया। आन्तरिक और बाह्य संघर्ष ने भारतीय जनमानस को क्षत-विक्षत कर डाला। आन्तरिक संघर्ष ने व्यक्ति तथा परिवार को तो बाह्य संघर्ष ने सामाजिक व्यवस्था को ही तोड़ दिया। जिसके कारण मनुष्य अपने आपको सीमितता के दाबरे में बांध लेने लगा। समाज में उच्च, मध्य, निम्न आदि वर्ग की स्थापना हुई। मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय समाज विवशताओं और कठिनाइयों में डूबा। निम्न वर्ग जी तोड़ श्रम तथा मेहनत करने के बावजूद गरीबी और लाचारी की भट्टी में उबलता जा रहा था।

भयानक महागाई एवं भीषण मुद्रा स्फीति ने अत्यन्त गम्भीर आधिक प्रश्नों को जन्म दिया। व्यस्ताधीन, श्रष्ट पुलिस व्यवस्था तथा कमजोर कानून व्यवस्था से देश में अव्यवस्था
के साथ अराजकता फैल गई। इन सब बातों ने चुना पौड़ी को आक्रोश, विद्रोह, नैराश्य एवं घटन का शिकार बना दिया। समकालीन साहित्यकारों के लिए सन साठ के बाद का काल मोहमंग एवं विद्रोह का रहा। यही विद्रोह साहित्य में आया। यह विद्रोह सम्पूर्ण बौद्धिक, मानसिक तथा भावात्मक शक्ति के साथ उजागर किया गया।

साठोत्तरी हिंदी उपन्यासकारों में समकालीन माने जाने वाले उपन्यासकारों की नई पौड़ी उभर आयी। उनमें समस्त चेतना, संवेदना की झाँकी देखने को मिलती है। समकालीन उपन्यास व्यक्तिव बोध, युगबोध, भावबोध तथा नये संवेदना का उपन्यास है। इसमें यथास्थितिवाद के स्थान पर संघर्ष और विद्रोह का आग्रह है। इन उपन्यासों में कथानक नदारद-सा है और चरित्रों का भी कोई खास महत्व न रह जाने से व्यक्ति को असहाय, निरर्थक, फालतू और असंगत बनाने वाले बाह्य परिवेश, आन्तरिक संघर्ष तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच संघर्षों का चित्रण होने लगा।
समकालीन हिन्दी उपन्यास व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्व परिवेश में भोगे हुए क्षणों की तीव्र अभिव्यक्ति का शक्तिशाली माध्यम है। उपन्यास के माध्यम से मनुष्य का अपने भोगे हुए यथार्थ से साक्षात्कार हो और प्रकृति, परिवेश, सामाजिक व्यवस्था तथा अंतरंग भावना के बीच नया अर्थपूर्ण सामंजस्य स्थापित हो सके। समकालीन उपन्यास समाज के वर्ग से हटकर व्यक्ति तथा उसकी अन्तःचेतना को अत्यधिक प्रधानता दे रहा है। "समकालीन जीवन की, अनेक समस्याएँ रूपांतरित करते हुए जो किसी वर्ग विशेष के सीमित कटचर में आबद्ध नहीं हुए। उच्च वर्ग की ऐतिहासिक के फलस्वरूप उसमें व्याप्त मानसिकता, अर्थात, अन्तर्जातिक उलझान, पारिवारिक भटकाव आदि से लेकर मध्य वर्ग के मानस का बौद्धिक एवं वैचारिक संघर्ष, निम्न वर्ग का असंतोष, विश्वास, अनांश्य और झोपड़पट्टी की धिनोनी बस्ती में अपनी जिन्दगी की रोजमर्रा की जटिल समस्याओं की गर्त में पाने की वजह से उनकी
मासूम बेदना को साठोत्तरी उपन्यास ने सफलतापूर्वक मुखरित किया है।''

हिंदी उपन्यास क्षेत्र में अनेक प्रकार की कृतियाँ निर्मित हुई और हो रही हैं। कुछ उपन्यासकार नव भावना की स्थापना में और कुछ उपन्यासकार मनुष्य की लघुता की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नशील हैं। दूसरी ओर अनेक उपन्यासकार समस्यामूलक आख्यानों द्वारा सामाजिक क्रांति की प्रेरणा दे रहे हैं। समसामयिक जीवन में व्याप्त जटिलता,विसंगति,मूल्यों के विघटन और मूल्यहीनता का समकालीन उपन्यासों में अंकन हुआ है। दूसरी ओर मनुष्य के दुर्बल तथा अस्वस्थ नपुंसक पात्रों का चित्रण भी हुआ है।

समकालीन उपन्यास क्षेत्र में विविध मुहूर्त धाराएँ लकित होती हैं। ये धाराएँ मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं-
(अ) सामाजिक : इस वर्ग के उपन्यासों का मुख्य स्थल मार्क्स के दर्शन का अनुगमिनी है। प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित है।

(आ) व्यक्तिवादी : इस वर्ग के उपन्यासों में व्यक्ति-स्वतंत्रता की भावना के साथ वैषयिक जीवन की कुंडाओं, अनास्था और विसंगतियों का अंकन किया गया। यह अंकन बहुधा अस्वस्थ और असामाजिक है।

(इ) समाज-व्यक्तिपरक : इस वर्ग के उपन्यासों में समाज और व्यक्ति दोनों का सन्तुलित रूप अंकित हुआ है।

इस तरह समकालीन उपन्यास सामाजिक, पारिवारिक, मनोविश्लेषणवादी, अस्तित्ववादी, आंचलिक, समय मूल्य सम्बन्धी विचारधाराओं को प्रधानता देता है। "वस्तुतः हिंदी साहित्य में आधुनिकता को एक विद्रोह के रूप में स्वीकार किया गया है। यह विद्रोह परम्परा के प्रति, विद्रोह रूढियों के प्रति, विद्रोह जीवन के प्रति और विद्रोह सम्बन्ध: आस्था के प्रति भी है।" निष्कर्षत: समकालीनता का बोध यथार्थ को
आत्मरिक जीवन में परिवर्तित कर देना है। जिसकी प्रतिक्रिया सामाजिक बाह्य जीवन-व्यापारों में देखी जा सकती है।

1.9 अलग-अलग चैतरणी (१९६७) : डॉ.शिवप्रसाद सिंह ग्रामीण जीवन के सिद्धांत से लेखक हैं। 'अलग-अलग चैतरणी' चह डॉ.शिवप्रसाद सिंह जी का प्रथम उपन्यास है। इसमें गाँव के एक-एक घर, एक-एक गली, एक-एक आंगन के हुलिया का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। बिहार के करेता गाँव को प्रारंभिक रूप से चित्रित करते हुए समस्त भारत के अरसी रूप का अलग-अलग चैतरणी में चित्रित किया है।

1.2 जल दूर ता हुआ (१९६९) : उपन्यासकार डॉ.रामदर्श मिश्र हिंदी के उन विनत साहित्यकारों में हैं। जिन्होंने स्वतंत्र भारत में आए ग्रामीण-जीवन के परिवर्तन को अनुभव एवं संबंधित के स्तर पर देखा और परवाह है। डॉ.रामदर्श मिश्र का प्रथम उपन्यास 'पानी के प्राचीर' में स्वाधीनता पूर्व की ग्रामीण चेतना को अभिव्यक्त किया है। 'पानी के प्राचीर' और
‘जल दूलता हुआ’ में अन्तर स्पष्ट करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं- "स्वास्थ्य-प्राप्ति के पश्चात् भारतीय गाँव के सम्बन्धों तथा मूल्यों के तनाव,विघटन और उसके जीवन संगण्यों एवं व्यथा की कथा है- ‘जल दूलता हुआ’। इसका भू-भाग कछार अंचल है जो पानी के प्राचीर का है। इनके पात्र,इनकी कथाएं, इनकी चेतना और संरचना सभी अपने-अपने हैं।"  अतः डॉ.मिश्रजी का ‘जल दूलता हुआ’ यह उपन्यास स्वातन्त्र्योत्तर मोहभंग अवस्था को लेकर लिखा गया है।

1.3 धरती धन न अपना (१९६२) : यह उपन्यास ग्रामीण अनुभव और संबंधों के धनी कथाकार जगदीशचन्द्र के बहु प्रशंसित उपन्यासों में सबोपरि है। जगदीश चन्द्र जी की किशोरावस्था उनके ननिहाल के गाँव रहन (पंजाब) में बीती। इस दौरान गाँव का एक हरिजन परिवार लेखक के नानाजी का खेत जोतता था। हरिजनों की धरती में लेखक का आना-
जाना अधिक हुआ करता था, जिससे हरिजनों की समस्याएँ दुःख लेखन ने निकटता से देखे हैं। "हरिजनों की आर्थिक कठुआ को अपनी आँखों से देखकर आगे चलकर प्रस्तुत उपन्यास लिखने की प्रेरणा जगदीशचन्द्र को मिली। उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य आर्थिक अभावों की चक्की में युग-युगान्तरों से पिस रहे हरिजन वर्ग के जीवन का चित्रण करना बताया है।" हरिजन बस्ती चमाड़ी की बड़ी समस्या टस्वीर लेखक ने पेश की है।

1.4 सोनभद्र की राधा (१९७६) : वर्तमान उपन्यास साहित्य में मधुकर सिंह सशक्त हस्ताक्षर हैं। सबसे बड़ा छल, "सीताराम नमस्कार", "बदनाम बेमतलब जिदिगियाँ", "नपुंसक" आदि बहुचरित उपन्यासों के बाद "सोनभद्र की राधा" की रचना सिंह जी ने की है।

1.5 अनारो (१९७७) : 'अनारो' मंजुल भगत की एक सशक्त एवं चित्र प्रधान औपन्यासिक रचना है। मेघठ (उ.प्र.) में जनमी
मंजुल भगत जी का ‘अनारो’ यह तीसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास को यशपाल प्रतिष्ठान व उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया है। इस उपन्यास का अनुवाद रूसी, जर्मन, अंग्रेजी व कन्नड में भी हुआ। ‘अनारो’ में उपन्यासकार ने देश की राजधानी दिल्ली में जो झुग्गी-झोपड़ियाँ हैं, उनमें रहने वालों के गर्हणीय जीवन का चित्रण किया है। “वास्तविक हिन्दी लेखिकाओं पर यह आरोप प्रकटित किया जाता है कि उनमें उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न-मध्य वर्ग का चित्रण तो मिल जाता है, परन्तु महानगरीय जीवन के कोठ से झोपड़पट्टी के अतिरिक्त निम्न वर्गीय जीवन को उन्होंने प्रायः अलिखित छोड़ दिया है।” अनारो’ इसका जवाब है।

1.6 सीताराम नमसकर (१९७६)

हिन्दी के समकालीन उपन्यासकारों में मधुकर सिंह का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है। ‘सबसे बड़ा छल’ के बाद लेखक की यह सशक्त रचना है। अपने पत्रिखें में
व्याप्त सामाजिक, आर्थिक विषमता से श्रुत्य होकर मधुकर सिंह ने लिखना आरंभ किया। समकालीन विषम व्यवस्था ही लेखक का प्रेरणा स्रोत रहा है। अवर्ण जाति में जन्मे लेखक ने अपने अनुभवों को अपनी रचनाओं का विषम बनाया है।

9.7 नाच्यो बहुत गोपाल (1978)

‘मानस का हंस’, ‘बौद्ध और समुद्र’ तथा ‘अमृत और विष’ जैसी बृहत, बहुचर्चित तथा पुरस्कृत सम्मानित रचनाओं की श्रृंखला में यशस्वी उपन्यासकार अमृतलाल नागर ने ‘नाच्यो बहुत गोपाल’ की रचना की है। यह लेखक की बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा की एक और कालजनी रचना है।

9.8 महाभोज (1979)

‘महाभोज’ प्रसिद्ध उपन्यासकार मत्तू भंडारी का दूसरा उपन्यास है जो ‘आपका बंदी’ के नाव वर्ष बाद प्रकाशित
हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास मिश्रित परिवेश से सम्बद्ध है, क्योंकि उससे जुड़े हुए अधिकांश पात्र नगरीय परिवेश के हैं। उपन्यास के घटनास्थल गाँव होते हुए भी उस गाँव में घटित होने वाली सारी घटनाओं के मूल सूत्रधार पात्र शहरी हैं। वहाँ की गतिविधियों को सम्मिलित करने वाला राजनीतिक परिवेश भी नगरीय है।

1.9 मोतिया (१९७१)

‘मोतिया’ यह प्रसिद्ध उपन्यासकार रामकुमार भ्रमर का मुरैना के आंचलिक जीवन की पृष्ठ-भूमि पर लिखा गया उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक डाकू समस्या और बीड़ों की रोमांचक जिंदगी को सजीव रूप से चित्रित करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक रामकुमार भ्रमर ‘मोतिया’ की प्रेमकहानी के माध्यम से सामाजिक भेदभाव को मिटाकर जातिहीन समाज बनाने का सपना देखते हैं। परन्तु व्यावहारिक शक्ति उसे प्रदान नहीं कर सकते। ‘मोतिया’ में
जातीय संघर्ष तथा वर्ग संघर्ष को यथास्थान चित्रित करने का सफल प्रयास उपन्यासकार ने किया है।

9.10 गोपुली गफूरन (१९८१)

हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार शैलेश मटियानी ने लोकचेतना के अपरिम शिल्पी के रूप में ख्याति अर्जित की है। मटियानीजी के प्रमुख उपन्यासों में 'बोरीवली से बोरीबंदर तक', 'होलदार', 'चिदंबर रसेन', 'जलतरंग', 'बर्फ', 'रामकली', 'सप्तगंगा' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

'गोपुली-गफूरन' शैलेश मटियानी का एक असहाय नारी की यातनाभरी जीवन यात्रा का जीवनदर्द दस्तावेज है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें मुख्यतः मनोविश्लेषण और अन्तः सत्य का चित्रण किया गया है। भारतीय स्त्री की असहायता, दुरदशा के साथ हिन्दू समाज की संकीर्णता, बाल विवाह जैसी कुटौतियाँ के दुष्प्रभाव को 'गोपुली गफूरन' में प्रस्तुत किया है।
1.91 ‘यथा प्रस्तावित’ (१९८२)

‘यथा प्रस्तावित’ यह प्रसिद्ध उपन्यासकार गिरिराज किशोर द्वारा लिखा गया है। गिरिराज किशोर वर्तमान हिंदी उपन्यास साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं। समकालीन उपन्यासकारों में सामान्यतः सातवें दशक के आस-पास से जिन्होंने लिखना शुरू किया था तथा समकालीन जीवन की, सामाजिक राजनीतिक विकृतियाँ, विविधताओं को रेखांकित किया। इन महानुभावों में गिरिराज किशोर जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है।
9.12 परिशिष्ट (१९८४)

'परिशिष्ट' गिरिराज किशोर का सन् १९८४ ई. में प्रकाशित उपन्यास है। समकालीन रचनाकारों में गिरिराज किशोर का नाम बहुत चर्चित रहा है। अपनी व्यापक दृष्टि, गहरी और सच्ची अनुभूति तथा तार्किक और ईमानदारी अभिव्यक्ति के कारण किशोर जी की रचनाओं का निर्वाण महत्व है। परिशिष्ट उपन्यास भारतीय दलित अछूत वर्ग की तमाम त्रासदी और मानवीय संवेदनाओं को विशेषज्ञ एवं निर्धारित करता है। "यह एक ऐसा उपन्यास है जो हमारी अर्थीनताओं पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। जिन-जिन बातों को लेकर हम अपने को सम्भ्य और अभिज्ञात मानते हैं। वे वास्तव में निराधार और अर्थीन हैं। 'परिशिष्ट' इस दृष्टि से हमारी झूठी मान्यताओं की पोल खोलता है।"\(^{8}\)
1.13 ‘झीनी झीनी बीनी चदरिया’ (१९८६)

आत्में दशक के कवि, कथाकार अबुल बिस्मिल्लाह की यह सशक्त कृति है। ‘समर शेष है’ के यशस्वीता के उपरांत लेखक ने लगभग दस सालों तक बुनकरों के बीच रहकर उनकी समस्या, संस्कृति-संस्कारों को लिपिबद्ध किया। ‘झीनी-झीनी बीनी चदरिया’ लेखक की अनुभूतियों की उपलब्धि है। यह रचना मात्र बुनकरों की समस्याओं का संकलन नहीं है, बल्कि बुनकरों की वर्तमान आर्थिक दशा के लिए जिम्मेदार पूँजीवादी समाज के दलाल गिरस्ता और कोटिवाल के चिनीने शोषण को उजागर करने वाला उपन्यास है।

1.14 शैलूष (१९८९)

शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखा गया ‘शैलूष’ यह बहुचर्चित उपन्यास है। समकालीन हिंदी साहित्य में शिवप्रसाद सिंह का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। ‘अलग-अलग चैतरणी’,
‘गली आगे मुड़ती है’, ‘मंजुशिमा’, ‘नीला चौंद’, औरत,
‘अभी दिल्ली दूर है’ और ‘शैलूष’ इत्यादि उपन्यास
शिवप्रसाद सिंह के नाम पर हैं। साहित्य के अन्य विधा-श्लेष्ट्र में
भी इनका बहुत बड़ा योगदान है।

‘शैलूष’ यह दलित वर्ग के आदिवासी नटों पर
आधारित उपन्यास है। लोक-संस्कृति की फृष्टभूमि पर यह
एक सशक्त औपन्यासिक रचना है। खानाबदोश नटों के जीवन
के संघर्षों को लेखक ने ‘शैलूष’ का विषय बनाया है।

१.१५ ‘छपर’ (१९९४)

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की जयप्रकाश कर्दम
द्वारा लिखी गयी ‘छपर’ यह दलितों की संघर्ष गाथा है। भाई
जय प्रकाश कर्दम ने दलित जीवन की भोगी हुई अनुभूतियों
को प्रस्तुत उपन्यास का विषय बनाया है। वास्तविक इस
समय स्वातंत्र्योत्सव दलितों की पीढ़ी अपनी कथा व्यंग्य लेकर
साहित्य की अनेक विधाओं के साथ प्रवेश करना चाहती है।
मराठी दलित साहित्य में आत्मकथाओं की धारा हिन्दी में उपन्यास कहलाती है। मराठी के डॉ.शरणकुमार लिबाले (अवकरमाशी), प्रा.प्र.ई.सोनकांबले (यादों के पंक्षी), माधव कोंडाविलकर (अंत्यज), लक्ष्मण गायकवाड (उचक्का), किशोर शांताबाई काळे (छोरा कोल्हाटी का) आदि दलित लेखकों ने अपने जीवनानुमानों का विषय चित्रण किया है। जयप्रकाश कर्मने भी 'छपर' में दलित जीवन की आत्मानुभूति को चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में दलित वर्ग के प्रति सर्वें जाति की निषेध की भावना को उजागर किया गया है।

9.16 मिटटी की सोगंध (१९९५)

प्रेम कपाडिया रचित यह उपन्यास दलित साहित्य का प्रतिनिधि उपन्यास है। प्रेम कपाडिया मूलतः पाकेट बुक्स के उपन्यासकार हैं। उन्होंने अपने टेक्स्ट नाम से सैकड़ों उपन्यास लिखे हैं। श्री कपाडिया जी पाकेट बुक्स के बारे में कहते हैं कि, 'जो लोग पाकेट बुक्स पढ़ते हैं हमारे उपन्यासकार उन्हें सस्ता पाठक मानते हैं क्योंकि उनका उत्पादन अच्छा नहीं
होता है और मूल्य भी १० या १५ रुपये ही होता है। मैं इसे गलत मानता हूँ कम पैसे में जो साहित्य उपलब्ध हो वही साहित्य है। आज हिंदी उपन्यासों की मिट्टी पलीत इसीलिए है।" २६ सम्बन्धता इसी कारण से ही प्रस्तुत उपन्यास को हम दलित मातिक में धारावाहिक के रूप में छपवाया गया था।

dलित समुदाय की समस्त चेताओं से प्रेमित होकर प्रेम कपाडिया ने ‘मिट्टी की सौगंध’ की रचना की है।

२६ मोरी की इंट (१९९६)

मदन दीक्षित का यह प्रथम उपन्यास है। उच्च वर्ण (ब्राह्मण) में जन्मे मदन दीक्षित का समाज सेवी संस्थाओं के वाणी के रूप में शहर के मजदूरों अधिकांशतः चमार, मेहतार या कंजड़ों के साथ निकट का सम्बन्ध था। उन्होंने इस निम्न वर्णियों की समस्ता, रीति-रिवाजों, परम्पराओं को भी निकट से देखा और अनुभव भी किया। निम्न जाति के साथ छुआ-छूत की जाती थी परन्तु लेखक बचपन से ही महात्मा गांधी के
विचारों से प्रभावित होकर सामाजिक समानता लाने में प्रयत्नशील रहे। ‘मोरी की ईट’ उपन्यास में मेहतार जाति की समस्याओं के साथ-साथ शहर के चुंबकी व्यवस्थापन का भी व्याख्यात्मक चित्रण हुआ है।

9.९८ ‘जस तस भई सबर’ (२०००)

भाई सत्यप्रकाश जी का यह प्रथम उपन्यास है।

चन्द्रमौली का ‘रक्त बीज’ कहानी संग्रह के बाद सत्यप्रकाश जी का दलित समाज की पीड़ाओं को,जयप्रकाश कर्मद के ‘छपर’ के बाद उपन्यास में रखने का सफल प्रयास है। कमेरे वर्ग पर दो प्रकार के लोग अन्याय करते हैं। एक वह है जो दलित तथा कमेरे वर्ग की रीढ़ पर चढ़कर उसका कच्चूमर निकालते हैं जबकि दूसरे लोग वे हैं उस पर महाक्र मलेपन करते हैं। महाक्र मलेपन करने वाले को दलित वर्ग अपना हितेष्ठि समझता है। वस्तुतः महाक्र मलेपन वर्ग स्वार्थ निहितार्थ ऐसा करता है ताकि कमेरा जीवित तो रहे किन्तु अन्याय के विरुध्द
विभेद अथवा संघर्ष विषयक चिन्तन की अवधारणा से भी पूर्णतया अछूता रहे जिससे सुविधायोगी निर्बाध मक्खन उपभोग करता रहे। ये दोनों वर्ग समय-समय पर अपने पाले बदलते रहते हैं और छद्म एवं चतुराई से कमरों के शोषण के लिए ये शृंखला बनाकर उसे दुष्क्र का रूप दे देते हैं।

1.99 ‘अल्मा कबूतरी’ (2002)

‘अल्मा कबूतरी’ यह मैत्रेयी पुष्पा का कबीराई जीवन पर लिखा गया नवीनतम उपन्यास है। मैत्रेयी पुष्पा हिंदी की नई पीढ़ी की चर्चित लेखिका हैं। मैत्रेयी जी के ‘स्मृति-दंश हो’, ‘बेतवा बहती रही’, ‘इदनरम’, ‘चाक’, ‘शूलानाट’ आदि उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। अपने उपन्यासों में लेखिका ने बुन्देलखंड के अंचल विशेष के लोकजीवन को जिस सहजता, संबंधनशीलता एवं मार्गिता के साथ विचित्रित किया है, उससे समकालीन लेखन में उनकी अलग पहचान बनती है।
1.20 दोहरा अभिशाप (2001)

दलित साहित्य में आम उपन्यासों की तरह कौशल्य-बैसंत्री का यह उपन्यास आत्मकथात्मक है। सुश्री बैसंत्री जी मराठी भाषी हैं और अपने छात्र जीवन में डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर की प्रेरणा से चले दलित छात्र संगठन की पदाधिकारी भी रह चुकी हैं। यह उपन्यास लेखिका की पूरी आत्मकथा नहीं लगती। उसके बचपन और उससे पहली पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि इसमें अधिक पाची जाती है। यह उपन्यास लेखिका के लम्बे, संघर्षपूर्ण, कठुआ-मीठे अनुभवों से भरे जीवन के एक सिहालोकन के रूप में लिया गया है।
निष्कर्ष

स्वतंत्रता के पश्चात् साहित्य-सृजन के कुछ नये आयाम विभिन्न दशकों में विकसित हुए। उनको विभिन्न नामों से पहचाना जाने लगा था। समकालीन साहित्य उनमें से एक है। समकालीन का अर्थ कोशों के आधार पर अलग-अलग बताया जाता है। एक कालीय,एक ही समय में होने वाला यह अर्थ स्थूल रूप से बताया जाता है। समकालीनता आधुनिकता की एक अंश या हिस्सा बन सकती है। समकालीनता समयगत और आधुनिकता प्रवृत्तिगत होती है। समकालीन उपन्यासों ने अपनी जिम्मेदारी पूर्ण करने का और भारतीय समाज का असली चित्र प्रस्तुत करने का यथायोग्य प्रयास किया है।
संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. साहित्य हिंदी साहित्य का परिवेश - हिंदी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, प. 54
2. जल टूटता हुआ - रामदर्श मिश्र, भूमिका
3. धरती धन न अपना - युगणुगानार के सार्वेक्षण शोषण की कहानी - डॉ. चंद्रभानु, सोनवणे, प. 309
4. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय - परिवेश के उपन्यास - डॉ. पालकान्त देसाई, प. 80
5. समकालीन हिंदी उपन्यास - रमणा, एम. एम. प्रभुकान, प. 16
6. मिट्टी की सांगण्ड - प्रेम कपाड़िया, प. 2
7. जल तल भई रबर - सत्यप्रकाश, प. 99